विद्यापति की सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना

डॉ० सुनील कुमार

विद्यापति के आनुवंशिक व्यक्तित्व के निर्माण में उनके पूर्वजों का पूरा योग था। विद्यापति का जन्म मध्य मिथिला के विसफी ग्राम के विसइवार ब्राह्मण कुल मे हुआ। इस वंश के कई व्यक्ति मिथिला राज्य के मंत्रीपद पर प्रतिष्ठित हुए थे, तथा कई ने अपनी विद्वता एवं प्रतिष्ठा का प्रदर्शन साहित्य के क्षेत्र में किया था।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी विद्यापति का युग बड़ा ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। मिथिला उस समय बिहार का प्रधान शिक्षा केन्द्र था और भारत के विभिन्न क्षेत्रों से जिज्ञासु विद्यार्थी नव्य–न्याय पढ़ने के लिए यहाँ आते थे। पक्षधर मिश्र के शिष्य पंडित रधुनाथ शिरोमणि ने अपने गुरू की आज्ञा से नवद्वीप (नदिया, बंगाल) में नव्य–न्याय का केन्द्र खोला था। न्याय–मीमांसा के क्षेत्र में मिथिला की देन अद्वितीय रही है तथा विद्यापति–युग में भी मिथिला इस दृष्टिकोण से सबसे आगे था।